International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.2 Nov-Dec 2024

युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर मादक पदार्थों का प्रभाव (नालन्दा जिला के बिहार शरीफ नगर के विशेष संदर्भ में)

मो. गयास सरवर
(शोधार्थी)
स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
सकूनत खुर्द, बिहार शरीफ, नालन्दा (बिहार)
Corresponding Author: मो. गयास सरवर
Email : gayassarwar786@gmail.com
DOI-10.5281/zenodo.14649664

सारांश :

कोई भी पदार्थ जिसका उपयोग किसी बीमारी या असमान्य स्थिति के लक्षणों के विराम, उपचार या राहत को रोकने के लिए किया जाता है उसे मादक पदार्थ कहते है। मादक पदार्थ यह भी प्रभावित कर सकती है कि मस्तिष्क और शरीर के बाकी हिस्से कैसे काम कर सकते हैं और मनोदशा, जागरूकता, विचार भावनाओं या व्यवहार में परिवर्तन का कारण बनते है, कुछ प्रकार के मादक पदार्थ का दुरूपयोग किया जा सकता है।

किशोरों के आराम करने और अपने अवरोध को कम करने के लिए सामाजिक समारोहों में मादक पदार्थ और अल्कोहल का उपयोग करते है। किशोरों में मादक पदार्थों की लत अक्सर विकसित होती है, क्योंकि उनके पार्टी समारोहों में मादक पदार्थों का उपयोग स्वाभाविक होता है। कुछ लोग शुरू में साथियों के दबाव के कारण उपयोग कर सकते हैं ताकि वे अपनी समस्याओं को कुछ समय भूल सके। जबकि कई किशोर मादक पदार्थों का सेवन लगातार करते हैं और वे कई समस्याओं का सामना करते है। जिसके परिणामस्वरूप उनमें अकेदमिक अक्षमताएँ आ जाती है। मांसिक स्वास्थ्य सहित अनेक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। उसमें ग्रेड का घटना, स्कूल और अन्य गतिविधियों से अनुपस्थिति होना और स्कूल छोड़ने की बढ़ती संभावना किशोरों के मादक पदार्थों के सेवन से जुड़ी एक समस्या है। मादक पदार्थों के सेवन के कारण कार दुर्घटना, शारीरिक विक्लांगता, और अनेक बीमारी की संभावना बढ़ जाती है। शराब और अन्य नशीले पदार्थों से जुड़े युवाओं की अनुपातहीन संख्या, आत्महत्या, हत्या, दुर्घटना और बीमारी के माध्यम से मृत्यु के बढ़ते जोखिम का सामना करती है। मांसिक स्वास्थ्य समस्याएँ और अवसाद, विकासात्मक अन्तराल, उदासीनता और अन्य मनोवैज्ञानिक शिथिलता अक्सर किशोरों के बीच मादक पदार्थों के सेवन से जुड़ी होती है। नशीले पदार्थों के सम्पर्क में आने वाले बच्चों को शारीरिक और यौन शोषण के साथ—साथ उपेक्षा का खतरा काफी बढ़ जाता है। अक्सर युवाओं में चिंता, अवसाद, भ्रम और शैक्षिक एवं ध्यान की समस्या का दर अधिक बढ़ जाता है।

स्वास्थ्य स्वस्थ परिवार और समाज का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह कहा जाता है कि किसी व्यक्ति का उसके शरीर में सबसे करीबी दोस्त होता है। नशे का सेवन करने वाले शारीरिक और मांसिक बीमारी से पीड़ित होते है। नशीले पदार्थों का व्यवहार लोगों को स्वीकार्य नही होते है। किसी भी नशीले पदार्थ के लगातार उपयोग करने से मस्तिष्क की कोशिकाएँ नष्ट हो जाती है और अन्य शारीरिक समस्याएँ पैदा हो जाती है।

शराब, भांग और विभिन्न उत्तेजक पदार्थ साइको एक्टिव ड्रग्स है। उनका व्यक्ति के मस्तिष्क के कार्य और संरचना पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मादक पदार्थों के उपयोग करने वाले को आर्थिक अभाव का सामना करना पड़ता है। नशीले पदार्थ के महंगे होने के कारण आर्थिक अभाव उत्पन्न हो जाता है जिसकी पूर्ति के लिए चोरी, हत्या या अन्य अपराध करते है। नशीले पदार्थ का उपयोग करने वाले सामान्यत: श्रम नहीं कर पाते हैं जिससे आर्थिक कठिनाई उत्पन्न हो जाती है।

शब्दकुँजी : मादक पदार्थ, अल्कोहल, स्वास्थ्य समस्या, आत्म हत्या, अवसाद, विकासात्मक अन्तराल, उदासीनता, मनोवैज्ञानिक शिथिलता।

परिचय :

मादक पदार्थों का दुरूपयोग एक सामाजिक घटना के रूप में, वर्तमान युग की स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है। अन्य सामाजिक घटनाओं की तरह नशीले पदार्थों के दुरूपयोग की प्रवृत्ति जटिल और बहुकारक है। वर्तमान युग में स्वास्थ्य समस्याओं में से यह एक है जिससे लगभग सभी देश ग्रसित है। युवा लोगों का मस्तिष्क २० वर्ष की आयु तक बढ़ने और विकसित होने लगता है। इस अवस्था में उपयोग का निर्णय लिया जाता है। युवावस्था में नशीले पदार्थों का सेवन मस्तिष्क में होने वाली विकासात्मक प्रक्रियाओं में बाधा उत्पन्न कर सकता है। उनमें जोखिम भरे काम करने की अधिक संभावना हो सकती है। नशीले पदार्थों के सेवन से युवाओं के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। **जेसर (१९८७)** ने व्यवहार की समस्या को एक ऐसे व्यहार के रूप में परिभाषित किया है जो अनुपयुक्त, अवांछनीय, कानूनी और सामाजिक नियंत्रण की प्रतिक्रियाओं से विचलित है। नशीले पदार्थों के दुरूपयोग से सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और आर्थिक गहरे प्रभाव पड़ते है। नशीले पदार्थों के दुरूपयोग की दर अलग—अलग

देशों और जातियों में अलग–अलग रही है। जितनी जल्दी युवा लोग नशीले पदार्थों का उपयोग करना शुरू करते हैं, उनके उपयोग रखने और जीवन में बाद में आदि होने की संभावना उतनी ही अधिक होती है। नशीले पदार्थों के सेवन का चलन युवाओं में स्थानांतरित होता रहता है। युवा लोगों द्वारा सबसे अधिक उपयोग की जाने वाले पदार्थों में शराब, तम्बाकू और मारिजुआना है। मानसिक विकारों का मादक पदार्थों से गहरा सम्बंध है जिसकी ओर युवाओं का बहुत अधिक झुकाव है। अवसाद विकारों को नशीले पदार्थों के दुरूपयोग से सम्बंधित महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारकों में से एक माना जा सकता हैं। जब युवा भावनात्मक समस्याओं का सामना कर रहा होता है तो वे दर्दनाक या कठिन भावनाओं को रोकने या उस पर काबू पाने के लिए अक्सर शराब या नशीले पदार्थों के उपयोग करने का प्रयत्न करता है। मादक पदार्थों के उपयोग से युवा मस्तिष्क में होने वाले विकासात्मक प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न होता है। यह उन्हें किसी भी निर्णय लेने को भी प्रभावित कर सकता है। नशीले पदार्थ और शराब की समस्याओं वाले अधिकांश युवा सहवर्ती मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित होते है, जिन्हें सहवर्ती विकार को सहरूग्णता कहा जाता है। इसके अतिरिक्त आचरण विकार और ध्यान में कमी जैसे बाहरी विकार है। अति सक्रिय विकार सबसे अधिक आम मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ प्रतीत होती है, लेकिन आन्तरिक विकार जैसे अवसाद एवं चिंता भी आमतौर से विकसित हो जाती है। मादक पदार्थों के सेवन से युवाओं में आर्थिक असंतुलन पैदा हो जाती है, जिसकी पूर्ति के लिए युवा असमाजिक कार्यों में संलग्न हो जाता है। इसके अतिरिक्त मादक पदार्थों के सेवन से युवाओं में हृदय रोग, उच्च रक्तचाप एवं नींद सम्बंधी विकारों की संभावना बढ़ जाती है। उसका असर शैक्षणिक प्रदर्शन पर भी पड़ता है।

लम्बे समय से मादक पदार्थों के अनुचित सेवन से मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत ज्यादा असर पड़ सकता है। मादक पदार्थों का अनुचित सेवन न केवल शरीर के लिए बल्कि मस्तिष्क के क्रियाकलापों के लिए भी विषाक्त होता है और इस तरह शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ व्यक्ति पर भी अनुचित सेवन के लम्बे समय तक रहने वाले प्रभाव से प्रतिकूल असर पड़ सकता है। मादक पदार्थों का सेवन वालों में मनोरोग विकार, विशेष रूप से चिंता और अवसाद विकार आम है, और साथ ही साथ ज्यादा से ज्यादा २५ प्रतिशत शराबियों में गंभीर मनोरोग गड़बड़ी की शिकायत होती है। मनोविकृति, भ्रम और कार्बनिक मस्तिष्क सिंड्रोम लम्बे समय तक होने वाले शराब के सेवन से प्रेरित हो सकते है जिसकी वजह से प्रमुख मानसिक स्वास्थ्य विकारों जैसे– मनोभाजन में गलत रोग पहचान की समस्या हो सकती है। मस्तिष्क में तंत्रिका–रासायनिक तंत्र की विकृति के कारण लम्बे समय तक शराब के अनुचित सेवन के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में पहली बार आतंक विकार विकसित हो सकती है। आतंक विकार शराब वापसी सिंड्रोम के भाग के रूप में भी विकसित हो सकती है। **मुनीश कुमार (२०१९)** ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "युवा पीढ़ी में नशीली दवाओं के दुरूपयोग की समस्या ने भारत में खतरनाक आयाम पैदा कर दिया है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव, बढ़ते आर्थिक तनाव और कमजोर परिवार के सहायक बंधनों के कारण नशीली पदार्थों के दुरूपयोंग की शुरूआत हो गयी है। भारत में बड़ी संख्या में युवक मादक द्रव्यों के सेवन में फंस गये है। नशीली द्रव्यों के सेवन से सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती है जिसमें पारिवारिक परेशानी और आपराधिक व्यवहार शामिल है।"

आज हमारा समाज बहुत व्यस्तता के कारण एक अजनबी दौर से गुजर रहा है। माता–पिता अपने–अपने व्यवसाय में इतने व्यस्त है कि जो समय अपने बच्चों को देना चाहिए वह नहीं दे पा रहे हैं। इससे हमारी नौवजवान पीढ़ी मानसिक तनाव एवं सही मार्गदर्शन के अभाव में मुख्य लक्ष्य से भटक रही है और क्षणिक आन्नद प्राप्ति के लिए मादक पदार्थों की तरफ आकर्षित हो रही है। यह एक सामाजिक बिडम्बना है एवं मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले दुष्परिणामों से युवा वर्ग को अवगत करवाना ताकि वे इस बुराई में लिप्त न हों। खाली दिमाग शैतान का घर होता हैं। इसलिए युवा वर्ग को अपने खाली समय का सदुपयोग सृजनात्मक व रचनात्मक कार्य करने में लगाकर अपने अन्दर छिपी कला में निखार लाने का प्रयास करना चाहिए। अगर हम सभी अब भी इसके प्रति सजग न हुये तो ये हमारी भावी पीढ़ी को नष्ट कर देगी। पाश्चात्यकरण का अनुसरण करते हुए व मीडिया के प्रभाव से एवं माता–पिता द्वारा आपेक्षित सफलता न मिलने पर किशोर वर्ग मादक पदार्थों के संरक्षण में आ जाते हैं। आज की युवा पीढ़ी मादक पदार्थों के सेवन की वजह से अपने लक्ष्य को भूल रही है और अपने जीवन को बर्बाद करके अपने माता–पिता को भी दुःख दे रही है।

अध्ययन का उद्देश्य : वर्तमान अध्ययन के सम्बंध में कुछ उद्देश्य है जो निम्नलिखित है

1. युवाओं में मादक पदार्थों के उपयोग करने की प्रवृत्ति का अध्ययन।
2. युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर मादक पदार्थों के प्रभाव का अध्ययन।
3. मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव से होने वाली आर्थिक हानि का अध्ययन।
4. मादक पदार्थों के सेवन से अपराध, भ्रष्टाचार एवं कदाचार को प्रोत्साहन देने वाले कारण का अध्ययन।
5. मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले पारिवारिक एवं सामाजिक विघटन का अध्ययन।

अनुसंधान उपकरण : यह अध्ययन बिहार शरीफ नगर के १५० युवाओं के साथ अनुसूची के आधार पर संरचित साक्षात्कार पर आधारित है। तथ्यों की आवृर्ति और औसत गणना के माध्यम से विश्लेषण किया गया है।

तथ्यों के विश्लेषण की विधि : अध्ययन में तथ्यों के विश्लेषण के लिए मात्रात्मक विधि का उपयोग किया गया है, क्योंकि अध्ययन के आंकड़े संख्यात्मक रूप से जुड़े हुए है।

तथ्यों का विश्लेषण :

अध्ययन में इकाई के तौर पर १५० मादक पदार्थों के सेवनकर्ता तथा २०७ लोग नॉन ड्रग्स यूजर्स को शामिल किया गया है। नशीले पदार्थों के दुरूपयोग करने वालों की औसत आयु २५.९ ं २.९६ वर्ष है और तुलना समूह की आयु २४.२ ± ३.३६ वर्ष है। १५० मादक पदार्थों के सेवन करने वालों में ४९ ;३२.७:) विवाहित थें, ९३ ;६२.०%) अविवाहित थे और ८ ;५.३:) अलग हो गये थे। दूसरी ओर १.९: मादक पदार्थ के सेवन नहीं करने वाले तलाकशुदा थे। तालिका २ में दो समूहों में उत्तरदाताओं के शिक्षा के स्तर को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। निष्कर्ष से स्पष्ट होता है कि मादक पदार्थों के सेवन करने वालों में से ३९: निरक्षर थे या प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की थी और ६: उत्तरदाताओं के पास उच्च डिग्री थी जबकि २७.२: नशीले पदार्थ के उपयोग नहीं करने वाले उत्तरदाताओं के पास अकादमिक डिग्री थी। शिक्षा स्तर और मादक पदार्थों के दुरूपयोग के व्यवहार के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बंध देखा गया। मादक पदार्थों के सेवन करने वालों में अवसाद, तनाव और चिंता का स्कोर मादक पदार्थ का सेवन नहीं करने वालों की तुलना में अधिक था।

मादक पदार्थों के उपयोगकर्ताओं में ११३ ;७५.३%) मेथमफेटामाइन के नशेड़ी थे, ९१ ;६०.६%) क्रेक एब्यूजर्स थे, ३९ ;२६.२%) ने गजब का सेवन करते हैं तथा ४९ ;३२.६%) शराब का उपयोग करते हैं। तालिका ३ के आकड़ों के अनुसार नशीले पदार्थों के दुरूपयोग करने वाले समूह में गैर नशीले पदार्थों के उपयोगकर्ताओं के बीच के सम्बंध में अधिक मनोवैज्ञानिक समस्याएँ थी, जिससे की नशीले पदार्थों के दुरूपयोग करने वालों में अवसाद, चिंता और तनाव का औसत स्कोर ;९.०८ ± ५.४०), ;७.९३ ± ५.६४) तथा ;८.७४ ± ४.४०) क्रमशः था जबकि गैर मादक पदार्थ धारक में ;५.७२ ± ४.९६), ;४.५५ ± ४.३४) तथा ;४.३६ ± ४.०६) क्रमशः था। इससे स्पष्ट होता है मनोवैज्ञानिक विकारों के अवसाद के लिए मादक पदार्थ धारकों में उच्चतम स्कोर पाया गया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :

वर्तमान अध्ययन के विश्लेषण से यह संकेत मिलता है कि लोगों की शिक्षा स्तर और नशीले पदार्थों के दुरूपयोग के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बंध है। परिणामों से पता चलता है कि सामान्य आबादी की तुलना में जो युवा मादक पदार्थ पर निर्भर है, उनमें मनोवैज्ञानिक विकृति और मानसिक विकारों के लक्षण पाए जाते हैं तथा वे मादक पदार्थों के सेवन नहीं करने वालों की तुलना में अवसाद, चिंता और तनाव का सामना अधिक करते हैं उन्हें जब आर्थिक कठिनाई का सामना होता है तो वे असमाजिक कार्यों को करने के लिए विवश हो जाते हैं। नशीले पदार्थों पर निर्भरता और मनोवैज्ञानिक के सह–जोखिम के अनुसार, यह अनुशंसा की जाती है कि उपरोक्त समस्याओं के निवारण के लिए शैक्षिक हस्तक्षेप और निवारक सामाजिक योजनाओं और मानसिक विकारों के उपचार का उपयोग किया जाए। साथ ही निम्न आयु समूहों में मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण पर आधारित सामान्य भविष्यवाणी के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों का विस्तार भी नशीले पदार्थों के दुरूपयोग को कम करने में प्रभावी हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जेसर.आर (१९८७) "प्रॉब्लम–विहेवियर दि साईकोलॉजिकल डेवलेप्मेंट एंड एडोल्सेन्ट प्रॉब्लम ड्रिंकिंग, अकादमिक प्रेस, न्यूयार्क, ब्रिटिश जर्नल ऑफ एडिक्सन, पृष्ठ ३३१–३४२
2. कुओं, सी.जे. (२०११) "रिस्क एंड प्रोटीक्टिव फैक्टर्स फॉर सुसाइड अमंग पेशेन्ट विथ मेथामफेटामिन डिपेंडेंस : ए नेस्टेड केस कन्ट्रोल, क्लिनिकल साइकोएटरी, न्यूयार्क, दि जर्नल ऑफ क्लिनिकल साईकेटरी, ७२(४), पृष्ठ ४८७–४९३
3. डंकन, बी.सी, क्रिस्टोफर, एस.एम. (२००८) "एडोल्सेन्ट – आनसेट सब्सटान्स यूज डिसऑर्डर्स प्रीडिक्ट यंग एडल्ट मोरसालिटी, जनरल ऑफ एडोलसेन्ट हेल्थ, ४२(६), पृष्ठ ६३७–६३९
4. ब्रीयर, एम.एल (२००७) सब्सटेंस यूज पाथबेज टू मेथमफेटामिन यूज एमंग ट्रीटेक यूजर्स, जर्नल ऑफ एडिक्शन बिहेवियर, ३२(५), पृष्ठ ३९५–४०२
5. आगा बख्शी, एच (२००९) "फैक्टस अफेइरिंग ट्रेंडस इन युथ ड्रग एब्यूज इंडास्ट्रयल, जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, ३६(५), पृष्ठ २६४–२६९
6. महबूब, एच (२००८) पैटर्न एंड इंक्लिनेशन ऑफ एडोल्सेन्टस टुवर्डस सब्सटेंस एब्यूज, जर्नल ऑफ शाहिद सदोंली यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिकल साईंसेस एण्ड हेल्थ सर्विसेज, १५(४), पृष्ठ ३५–४२
7. सेर्रास, ए०एच (२००९) सब्सटेंस यूज बिहेवियर, मेन्टल हेल्थ–प्रॉब्लम्स, एण्ड यूज ऑफ मेन्टल हेल्थ सर्विसेज इन ए प्रोबविलिटी सैंपल ऑफ कॉलेज स्टूडेंटस, जर्नल ऑफ एडिक्शन बिहेवियर, पृष्ठ ३२५–३२९
8. सजालाचा, एल.ए (२००९) सब्सटेंस एब्यूज एंड मेंटल हेल्थ डिस्चैरिटीज : कम्परिजन्स एक्रॉस सेम्सुअल सैंपुल ऑफ यंग इंडियन वोमेन, जर्नल ऑफ सोशल साइंस मेडिसिन, पृष्ठ ३३६–३३९
9. अमीन शोकरावी, एफ (२०१०) हेल्थ प्रॉब्लम बिहेवियर्स इन इरानीयन अडॉलसेन्टस: ए स्टमी ऑफ क्रॉस कल्चरल एडोपटेशन, रिलाबिलिटी एंड वेलिडिटी, जर्नल ऑफ रिसर्च मेडिसिन साईस, पृष्ठ २७२–२७६
10. बेकर, एस० जे (२०११) "फैक्टर्स दैट इन्फेलुन्स ट्रांजेक्टरीज चेंज इन फ्रिक्वेंसी ऑफ सब्सटेंस यूज एण्ड क्वालिटी ऑफ लाइफ अमंग एडोलसेन्टस रिसिविंग ए ब्रीफ इंटरवेंशन जर्नल ऑफ पब्लिक मेडिसिन, पृष्ठ २७५–२८०